भा. कृ. अनु. प.– केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान

पहुज डेम के पास, ग्वालियर रोड, झाँसी (उ.प्र.) – 284003

कृषिवानिकी सलाह (माहः जून)

•मई माह में खोदे गये गड्ढों की मिट्टी में 20–25 किलोग्राम अच्छी सड़ी हुई खाद, 500 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 100–150 ग्राम पोटाश, 500 ग्राम नीम की खली या 1–2 किलो नीम के पत्ते मिलाकर पुनः भर दें, ताकि बारिश आने पर गड्ढों की मिट्टी बैठ जाये।
•नये पेड़ लगाने के लिये पौध की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
•एक–दो वर्ष पूर्व लगाये पेड़ों व फलदार वृक्षों की समय–समय पर सिंचाई करें।
•फलदार पेड़ों में कलम बांधने के नीचे आने वाले फुटान को समय–समय पर हटायें।
•पेड़ों के थाले बनायें व पेड़ के तनें के पास मिट्टी चढ़ायें ताकि जल भराव न हो।
•खेतों के चारों ओर बाड़ बनाने का कार्य करें ताकि आवारा पशुओं से फसल नुकसान से बचाया जा सके।
•खरीफ की फसलों का चयन कर, उच्च किस्म के बीज की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
•खेत के आस–पास से सुखी घास की सफाई कर दें ताकि आग लगने का खतरा न रहे।
•कृषि कार्य करते समय मास्क लगायें, बार–बार हाथ साबुन से धोये और सामाजिक दूरी का विशेष रूप से पालन करें ताकि वैश्विक बीमारी कोरोना के खतने से बचे।
•रबी फसलों के अवशेषों को इकट्ठा करके खाद बनाने वाले गड्ढे में डाल दें। फसल के अवशेषों को कदापि खेत में जलायें नहीं।
•खरीफ फसलों की बुवाई के लिए खेतों की तैयारी आरम्भ करें। खेतों की तैयारी बोई जाने वाली फसल के अनुसार ही करें।
•खरीफ फसलों के बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
•गोबर खाद को वर्षा आने से पहले ही खेत में अच्छी तरह से फैला दें।
•खेतों की गहरी जुताई करके मेड़बन्दी सुनिश्चित करें ताकि वर्षा जल का खेतों में संरक्षित किया जा सके।
•रबी फसलों के उत्पाद को अच्छी तरह से सुखाकर ही भण्डारण करें ताकि फसल उत्पाद को भण्डारित कीड़ों से बचाया जा सके।
•खेत में खड़ी हुई सब्जी वाली फसलों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
•खेतों में खड़ी चारा फसलों की समय–समय पर सिंचाई सुनिश्चित करें ताकि उच्च गुणवत्तायुक्त चारा प्राप्त हो सके।
•टिड्डी दल के फसल पर आक्रमण के समय जोर–जोर से आवाज करें ताकि समय से टिड्डियों से होने वाले फसल नुकसान को बचाया जा सके।

कृषिवानिकी संबंधित किसी भी जानकारी हेतु किसान भाई, निदेशक, भाकृअनुप–केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी (उ0प्र0) से सम्पर्क करें।

निदेशक
केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी